Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23068
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23068

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

संगीत कला के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर: एक अध्ययन

प्रिया शर्मा [1] and डॉ.सुरेन्द्र कुमार[2]

1. शोध छात्रा. संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज.
2. (सह-अध्यापक). संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
संगीत, मंचीय प्रस्तुति, रोजगार, कला।

Abstract

भारतीय संस्कृति और समाज में संगीत एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण कला के रूप में प्रस्थापित है, जो न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम माना जाता है अपितु यह जीवकोपार्जनकासाधन भी प्रदान करता है। समय के साथ-साथ बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों तथा तकनीकी विकास के कारण संगीत कला के क्षेत्र में स्वरोजगार की अनेक संभावनाएँ विकसित हुई हैं। आधुनिक परिदृश्य में संगीत मात्र मंचीय प्रस्तुति तक ही सीमित नहीं रहा गया है, बल्कि यह शिक्षा, डिजिटल माध्यमों तथा सांस्कृतिक उद्योगों से जुड़कर एक व्यापक स्वरूप ग्रहण कर चुका है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि संगीत से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्ति किस प्रकार स्वतंत्र रूप से अपनी जीविका के लिए आय अर्जित कर सकता है या कर रहा है। संगीत शिक्षण, मंचीय प्रस्तुति, रिकॉर्डिंग, संगीत निर्देशन, भक्ति एवं लोकसंगीत का गायन, यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल मंचों पर प्रस्तुतियाँ, संगीत विद्यालयों की स्थापना और ऑनलाइन प्रशिक्षण जैसी गतिविधियाँ स्वरोजगार के प्रमुख साधन के रूप में उभर कर हमारे समक्ष आ रही हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक आयोजनों, धार्मिक अनुष्ठानों, विवाह समारोहों तथा अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में संगीत कलाकारों की भागीदारी भी आर्थिक लाभ का एक महत्वपूर्ण स्रोतबनती है। यह अध्ययन संगीत के पारंपरिक

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- प्रिया शर्मा
Address:-शोध छात्रा. संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

तथा आधुनिक दोनों आयामों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाता है कि उचित प्रशिक्षण, रचनात्मक दृष्टिकोण और तकनीकी संसाधनों के उपयोग से ही संगीत प्रतिभा को व्यावसायिक स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत कला आज के समय में युवाओं और कलाकारों के लिए आत्मनिर्भरता तथा सम्मानजनक जीवनयापन का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रही है।

Introduction:-

"संगीतं अपि साहित्यं सरस्वती स्तनद्वयम्" अर्थात संगीत और साहित्य मां सरस्वती के दो स्वरूप हैं। भारतीय संस्कृति में संगीत को न केवल साधना का मार्ग माना गया है, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला भी है। आधुनिक युग में वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने संगीत के पारंपरिक स्वरूप को बदलते हुए इसे एक वृहद उद्योग के रूप में स्थापित कर दिया है। आज संगीत केवल मंच प्रदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 'स्वरोजगार' के अनगिनत द्वार खोलने वाला एक सशक्त माध्यम बन चुका है। प्राचीन काल से ही गायक, वादक और नर्तक अपनी कला के माध्यम से जीवन यापन करते रहे हैं। आधुनिक समय में तकनीक और डिजिटल प्लेटफॉर्म के विकास के कारण संगीत के क्षेत्र में आय के अनेक नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। आज संगीत शिक्षण, मंचीय प्रस्तुति, रिकॉर्डिंग, फिल्म संगीत तथा ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा कलाकार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकते हैं। ऐतिहासिक रूप से संगीतज्ञों को राजाश्रय प्राप्त होता था, लेकिन बदलते समय के साथ संगीत ने अपनी व्यावसायिक जड़ें मजबूत की हैं। वर्तमान आर्थिक परिवेश में, जहाँ नौकरियों की सीमाएं हैं, संगीत की विभिन्न विधाएं जैसे—गायन, वादन, संगीत शिक्षण, साउंड इंजीनियरिंग, और डिजिटल कंटेंट क्रिएशन—युवाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान कर रही हैं।

संगीत का अर्थ और स्वरूप:-

भारतीय संगीत का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। इसका आरम्भ वैदिक युग से माना जाता है। सबसे पहले ऋषि मुनियों द्वारा संगीत को आत्मिक आनंद के लिए प्रयोग में लाया गया। वैदिक काल में ऋचाओं के गायन के लिए स्वरों को प्रयोग से लाया गया। जितनी यहाँ की सभ्यता गौरवमयी रही है, उतना ही यहाँ का संगीत विशाल, विस्तृत व महान रहा है। भारतीय संगीत प्राचीन काल से ही धर्म के साथ जुड़ा हुआ है और धर्म व संस्कृति के विकास से ही इसका विकास हुआ है। संगीत शब्द 'गी' धातु में 'सम' उपसर्ग तथा 'क्त' प्रत्यय लगाकर बना है, अर्थात "सम+गी+क्त = संगीत"। इसका शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ भली भाति गाने योग्य सम्यक गीत है। समाज में संगीत के पूर्ण अर्थ के विषय में जो मान्यता है वो यह है कि गाने बजाने को संगीत कहते है, परन्तु यह अर्थ संगीत का बाह्य पक्ष ही व्यक्त करता है। संगीत शब्द ज्यादा प्राचीन नहीं है। प्राचीन समय में संगीत शब्द के लिए साम, गीति, गान्धर्व आदि संज्ञा प्रचलित थी। संगीत शब्द के लिए अंग्रेज़ी भाषा में 'म्यूज़िक' शब्द का प्रयोग किया जाता है। "म्यूज़िक शब्द मूल है ग्रीक परम्परा के लिए उन देवियों के लिए प्रयुक्त संध्या है, जो विभिन्न ललित कलाओं की अधिष्ठात्री मानी जाती है।" ग्रीक परम्परा में अधिष्ठात्री देवी म्युज़ है। इस दृष्टि से इसमें काव्य तथा अन्य कलाओं का भी समावेश होता है। समय समय पर विद्वानों ने संगीत की पृथक-पृथक परिभाषा बताई है। कई ग्रन्थकारों ने संगीत में गीत, वाद्य, नृत्य इन तीनों का समावेश बताया है। इन तीनों प्रमुख कलाओं में गीत को प्रधान बताया गया है।1

भारतीय संगीत का स्वरूप अत्यंत प्राचीन, व्यापक और समृद्ध है, जो मुख्य रूप से गायन, वादन और नृत्य का त्रिवेणी संगम (नाट्यशास्त्र के अनुसार) है। वैदिक सामगान से विकसित होकर यह आज के शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय, सुगम और लोक संगीत तक विस्तृत हुआ है। शास्त्रीय गयन शैली और संरचना के अंतर्गत राग-तत्व और उसकी संरचना, ताल प्रणाली, बंदिश, आलाप, तान, गुरु-शिष्य परंपरा, घराने आदि शामिल हैं। शास्त्रीय संगीत के आवश्यक तत्व नाद, श्रुति, स्वर, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्ण, अलंकार, आलाप, लान, गमक हैं।2 सुगम संगीत एक ऐसा संगीत है जो श्रोताओं द्वारा आसानी से समझा जा सकता है एवं जिसके अंतर्गत भावात्मक आनंद की अनुभूति हो, यही सुगम संगीत के रूप में परिलक्षित होता है। सुगम संगीत को जितना समझना आसान है, सुनना आसान है, उतना ही उसकी रचना करना अथवा उसे अच्छी तरह से गाकर बजाकर निभा पाना दुर्गम है। यह संगीत जिसे सहजता से सीखा और गाया बजाया जा सके, जिसे निश्चित नियमों में बांधा नहीं गया है, जो लोक में प्रिय है, सुगम संगीत कहलाता

है। लोकगीत, लोकप्रिय संगीत, भजन, फिल्मी गीत, आदि इसी श्रेणी में आते हैं।3 लोक संगीत जनसामान्य की आत्मा, संस्कृति और रोजमर्रा के जीवन की सहज व स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, जो मौखिक परंपरा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है। यह ग्रामीण परिवेश, लोक भाषाओं, ऋतुओं और सामाजिक अवसरों जैसे- विवाह, जन्म आदि से गहराई से जुड़ा होता है, जिसमें शास्त्रीय नियमों की बजाय सरलता और माधुर्य की प्रधानता होती है। लोकगीतों में विशेषतया श्रृंगार, करूणा, हास्य और अद्भुत रसों का निरूपण होता है।4

संगीत के क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर:-

संगीत का अर्थशास्त्र से वैसे ही संबंध है जैसे अन्य कलाओं का अर्थशास्त्र से है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक धनार्जन करना चाहता है, जिसमें से संगीत कला भी एक ऐसा विषय है जिसकी शिक्षा प्राप्त करने के बाद मनुष्य धनोपार्जन करके अपनी जीविका सरलता पूर्वक चला सकता है।संगीत के क्षेत्र में व्यावसायिकता सम्बन्धी उल्लेख सर्वप्रथम वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं, अर्थात् वैदिक काल में संगीत के माध्यम से धनोपार्जन का प्रारम्भहो गया था। तत्कालीन समय में व्यवसायी गायक, वादकों के वर्ग बन गये थे जिनमें सैलूस, नर्तक, सूत, वीणा वादक, वंशी वादक, काहल वादक, शंखध्म, दुन्दभि वादक इत्यादि प्रमुख थे। आरण्य काल में व्यवसायी संगीतकारों को 'गाथाकार' और गाथी कहा जाता था।5 डिजिटल युग के इस वर्तमान परिपेक्ष्य में संगीत के क्षेत्र में स्वरोजगार के विभिन्न अवसर इस क्षेत्र के लोगों के लिए बहुत ही लाभदायक साबित हो रहें हैं। कुछ प्रमुख माध्यम निम्न हैं –

संगीत शिक्षण :-

भारत के संगीत शिक्षण की परम्परा का प्रचलन प्राचीनकाल से ही है। यद्यपि प्राचीनकाल और मध्यकाल में संगीत की शिक्षा का आदान-प्रदान क्रमशः गुरुकुल पद्धति एवं गुरू शिष्य परम्परा के आधार पर किया जाता था। किन्तु 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् संगीत का शिक्षण भी गुरु-शिष्य परम्परा के स्थान पर सामूहिक रूप से शिक्षण संस्थानों में किया जाने लगा जिन्हें हम घरानों के नाम से जानते हैं। संगीत को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कई संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना हुई जो बाद में किसी न किसी संस्थान के रूप में क्रियाशील हुये। वर्तमान समय में संगीत का प्रशिक्षण एक स्वतन्त्र विषय के रूप में विद्यालय, महाविद्यालय एवं अन्य संगीत संस्थाओं के माध्यम से दिया जा रहा है। इन संस्थानों में कार्यरत संगीत शिक्षकों को उचित वेतनमान दिया जा रहा है। वर्तमान समय में देश में ये संस्थान एक और तो संगीत के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं. वहीं दूसरी ओर संगीत साधकों की आर्थिक सहायता भी कर रहे हैं। केन्द्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों के द्वारा समय-समय पर अन्य विषयों की भाँत्ति ही संगीत शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है जिनमें कुछ प्रमुख हैं- केन्द्रिय विद्यालय संगठन, जवाहर नवोदय विद्यालय, दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड, हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, मध्य प्रदेश सेवा चयन आयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय इत्यादि है। इनके अतिरिक्त अनेक गैर सरकारी संस्थायें भी संगीत के क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध करा रही है।6

मंचीय प्रस्तुति:-

संगीत के क्षेत्र में मंच प्रस्तुति स्वरोजगार और करियर का सबसे पुराना और आज भी सबसे आकर्षक माध्यम है। एक कलाकार के लिए मंच केवल अपनी कला दिखाने की जगह नहीं, बल्कि उसकी आय और पहचान का मुख्य स्रोत भी है। यदि संगीत का विद्यार्थी संगीत के प्रायोगिक पक्ष व ज्ञान को गूढ़ रूप से जानता है और वह उसकी बारीकियों को अच्छी तरह से पहचानता है, तो वह एक मंचीय कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित होकर अपना जीवन यापन करने में सक्षम हो सकता है। मंच प्रर्दशन से जहाँ एक ओर कलाकार अपनी कला के माध्यम से श्रोताओं को आनन्दित करता है वहीं दूसरी ओर कला के माध्यम से जीवीकोपार्जन भी करता है। इसके अंतर्गत सवाई गंधर्व, तानसेन समारोह जैसे प्रतिष्ठित मंच, बॉलीवुड नाइट्स, सूफी संगीत संध्या, पॉप म्यूजिक शो, म्यूजिक बैंड, सोलो

परफॉर्मर, जागरण/भजन संध्या, संगतकार, इवेंट मैनेजर इत्यादि के रूप में संगीत के क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं। शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोकसंगीत, गजल फ्युजन आदि के क्षेत्र में भी भरपूर अवसर उपलब्ध है।7

फिल्म और टीवी जगत :-

फिल्म और टीवी जगत संगीतकारों के लिए स्वरोजगार और करियर का सबसे बड़ा और ग्लैमरस क्षेत्र है। यहाँ 'संगीत' केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि कहानी का एक अनिवार्य हिस्सा होता है। फिल्म और टीवी में संगीत का क्षेत्र अब केवल मुंबई तक सीमित नहीं रह गया है। डिजिटल स्टूडियो और ऑनलाइन कोलेबोरेशन की वजह से एक संगीतकार अपने घर से भी 'फ्रीलांस' काम कर सकता है। हालांकि, इस क्षेत्र में नेटवर्किंग और नवीनतम सॉफ्टवेयर (जैसे Logic Pro, Ableton) का ज्ञान होना स्वरोजगार की सफलता के लिए अनिवार्य है। फिल्म और टीवी उद्योग में संगीत के क्षेत्र में रोजगार के बेहतरीन अवसर मौजूद हैं, जिनमें मुख्य रूप से संगीतकार (कंपोजर), गायक (सिंगर), गीतकार (लिरिसिस्ट), साउंड इंजीनियर/मिक्सर, म्यूजिक प्रोड्यूसर और म्यूजिक सुपरवाइजर शामिल हैं। इसके अलावा, आजकल स्वतंत्र संगीत (इंडिपेंडेंट म्यूजिक), डिजिटल कंटेंट, बैकग्राउंड स्कोरिंग और साउंड डिजाइनिंग में भी करियर की काफी संभावनाएं हैं।8

संगीत चिकित्सा :-

संगीत चिकित्सा को वर्तमान समय में व्यावसायिक चिकित्सा के क्षेत्र में रोग निदान हेतु विश्वसनीय चिकित्सा के रूप में अपनाया जाना संगीत की सर्वव्यापकता को सिद्ध करता है। संगीत चिकित्सा में व्यवसाय की अपार संभावनाएं है किंतु संगीत चिकित्सा का उचित ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस क्षेत्र की सीमाएं और भी विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश कर सके इसके लिए देश के विभिन्न संस्थाओं में यह एक विषय के रूप में होना चाहिए, जिसमें संगीत चिकित्सा से संबंधित कोर्स भी करवाये जाए और संगीत चिकित्सा से जुड़े हुए शिक्षकों व अध्यापकों की नियुक्ति की जा सकें। संगीत चिकित्सा भी व्यवसाय का एक बड़ा माध्यम बन चुका है। इसके अतिरिक्त संगीत के अनेकों क्षेत्र है जिसमें संगीत की शिक्षा प्राप्त कर उसको व्यवसायिक दृष्टि से अपनाते हुए जीविकोपार्जन किया जा सकता है।9

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म:-

वर्तमान समय में संचार प्रौद्योगिकी में हुयी क्रान्तिकारी प्रगति के कारण विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे- फेसबुक, यू-ट्यूब, स्पॉटिफाई, टिकटॉक, इंस्टाग्राम इत्यादि पर अपनी कला के प्रदर्शन द्वारा अनेक कलाकार आर्थिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों ने संगीत के क्षेत्र में रोजगार के अनगिनत अवसर पैदा किए हैं। अब कलाकार घर बैठे ही अपना संगीत स्ट्रीमिंग, टीचिंग, जिंगल्स, और एडिटिंग के जरिए अपनी आय कमा सकते हैं। सोशल मीडिया और डायरेक्ट-टू-फैन प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी पहुंच बढ़ाकर संगीतकार आसानी से पेशेवर करियर बना सकते हैं।10

संगीत और आर्थिक सशक्तिकरण:-

संगीत आजीविका और कला के मिलन से आर्थिक सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम बन कर उभरा है। यह गायन, वाद्ययंत्र वादन, संगीत निर्माण और संगीत शिक्षण के माध्यम से न केवल रोज़गार पैदा करता है, बल्कि युवाओं और महिलाओं को स्वतंत्र भी बनाता है। डिजिटल युग में, स्वतंत्र कलाकार और पारंपरिक कलाकार दोनों अपनी प्रतिभा का मुद्रीकरण कर रहे हैं।

निष्कर्ष:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संगीत केवल मनोरंजन या आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं है, बल्कि वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में यह स्वरोजगार का एक सशक्त और बहुआयामी क्षेत्र बनकर उभरा है। डिजिटल क्रांति और वैश्वीकरण ने

संगीतकारों के लिए पारंपरिक सीमाओं को समाप्त कर दिया है।आज संगीत में स्वरोजगार का अर्थ केवल मंच प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। संगीत शिक्षण, साउंड इंजीनियरिंग, म्यूजिक प्रोडक्शन, डिजिटल कंटेंट क्रिएशन (यूट्यूब/स्पॉटिफाई), और संगीत चिकित्सा जैसे नए क्षेत्रों ने करियर के व्यापक द्वार खोले हैं। शोध यह दर्शाता है कि आधुनिक युग में वह संगीतकार अधिक सफल हैं जो संगीत के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान सॉफ्टवेयर, सोशल मीडिया मार्केटिंग में भी दक्ष हैं। साथ ही उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में सरकारी तथा गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों, विभिन्न संगीत सम्मेलनों, सांस्कृतिक महोत्सवों, संगीत प्रतियोगिताओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत सम्बन्धी प्रकाशनों, पत्र-पत्रिकाओं, संगीत चिकित्सा, रिकॉर्डिंग स्टूडियो, सोशल मीडिया प्लेटफार्म इत्यादि में व्यवसाय के विभिन्न अवसर उपलब्ध है।

संदर्भ सूची :-

1. शर्मा,डॉ भारती.(2022).सांगीतिक एवम् धार्मिक परम्परा एक अवलोकन.दिल्ली: संजय प्रकाशन, पृ. सं. 52
2. कुमारी, मीरा. (फरवरी 2019). संगीत में राग के तत्वों का वर्णन. आईजेसीआरटी, पृ.सं. 1,2 https://ijcrt.org/papers/IJCRT1133747.pdf
3. तिवारी, डॉ. उमाशंकर (1997). आधुनिक गीतकाव्य. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, पृ.सं. 27
4. उपाध्याय,डॉ० कृष्ण देव.(1960). भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन. वाराणसी: हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पृ. सं. 328
5. ममगाई,डॉ. शिखा.(2024).वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में व्यावसायिकता के आयाम: एक अध्ययन, सीएएसआईआरजे, पृ. सं 1 http://www.casirj.com/article_pdf?id=20416.pdf
6. ममगाई,डॉ. शिखा.(2024).वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में व्यावसायिकता के आयाम: एक अध्ययन, सीएएसआईआरजे, पृ. सं 1 http://www.casirj.com/article_pdf?id=20416.pdf
7. सिंह,डॉ. रितु.(जनवरी 2023). संगीत में रोज़गार की नई संभावनाएं: एक अध्ययन, संगीत गैलेक्सी, पृ.सं. 2 https://sangeetgalaxy.co.in/paper/sangeet-me-rozgar-ki-nai-sambhavnain-ek-addhyayan
8. https://share.google/aimode/InI6mpBgfPqiaYwxe
9. श्रीवास्तव,एस.(जुलाई 2020).वर्तमान समय में संगीत के अर्थशास्त्र का बदलता स्वरूप,आईजेआरएसएसआईएस, पृ.सं. 4
10. ममगाई,डॉ. शिखा.(2024).वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में व्यावसायिकता के आयाम: एक अध्ययन, सीएएसआईआरजे, पृ. सं 3 https://www.casirj.com/article_pdf?id=20416.pdf